

# मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-1

“मेरे पति के एक दोस्त को चाहने लगी, वो भी मेरा दीवाना था. मैं उससे चुदाई करवाने की सोचने लगी, उसे नंगी होकर भी दिखाया लेकिन उसने मुझे छुआ भी नहीं! क्या था उसके मन में!...”

Story By: priti Sharma (pritixyz24)

Posted: Tuesday, September 25th, 2018

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-1](#)

# मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-1

दोस्तो, मैं आप सब की प्यारी प्यारी प्रीति शर्मा !

आज मैं आपको अपने एक दीवाने की बात बताने जा रही हूँ। दरअसल ये दीवाना मेरे ही पति का दोस्त है, बहुत पुराना दोस्त है, हमारी शादी से इसका हमारे घर पर आना जाना है। अब कैसे मेरे और उसका संबंध बना, उसकी कहानी मैं आपको सुनाती हूँ।

बात हमारी शादी के समय की है, जब मैं शादी करके अपने पति के घर आई, तभी से मैं रवि, अपने पति के जिगरी दोस्त को देख रही थी। हर काम में समार्ट, सभी काम फटाफट करता था। देखने में भी बड़ा अच्छा खासा था, कद काठी रंग रूप सब सुंदर था।

शादी के कुछ दिन बाद जब हम हनीमून पर गए तो तब बातों बातों में मैंने अपने पति से पूछा- ये रवि ने शादी नहीं की ?

तो मेरे पति ने उसकी बात बताई कि वो एक लड़की से बहुत प्यार करता था, उससे शादी भी करना चाहता था, मगर किन्हीं कारणों से उनकी शादी नहीं हो सकी, बस तभी से उसके वियोग में है। दरअसल रवि एक बहुत ही प्यार करने वाला, ख्याल रखने वाला इंसान है, पर इस बेचारे का दिल ऐसा टूटा है कि अब ये किसी भी लड़की के पास तक नहीं जाता, न ही किसी को पास आने देता है। कोई गर्ल फ्रेंड नहीं, न शादी। बस अपनी उस मोहब्बत की याद में ही जीता है।

मुझे रवि से बड़ी सुहानुभूति हुई। जब हम हनीमून से वापिस आए तो धीरे धीरे मेरी भी रवि से अच्छी दोस्ती हो गई। और सच में रवि था भी बहुत अच्छा दोस्त ; ऐसा दोस्त जिस पर आप आँख बंद करके विश्वास कर सकते हो। मैं भी कई बार उसके साथ बाज़ार वगैरह गई, तो मैंने देखा वो मेरा बहुत ख्याल रखता। मेरे हसबेंड भी उस पर पूरा एतबार करते।

मैंने भी नोटिस किया कि उसकी नज़र गंदी नहीं थी। उसने कभी भी मेरे चेहरे या जिस्म को घूरने जैसी कोई हरकत नहीं की, गलत छूने की तो बात ही दूर की है।

धीरे धीरे मेरा भी विश्वास रवि पर बनने लगा, और बनता ही चला गया। वो भी मुझे बहुत पसंद करता। खास बात ये के हम दोनों का जन्म का महीना भी एक ही था, वो तो मुझे अपनी बहुत अच्छी दोस्त तो मानता ही था, मेरा नाम लेकर ही मुझसे बात करता था।

हमारे घर में आने की उसको कोई रोक टोक नहीं थी, हम तीनों दोस्त आपस में बिल्कुल लड़कों की तरह बात कर लेते थे, यहाँ तक की हमने अपनी सेक्स और हनीमून की बातें भी उससे शेयर की थी।

वो भी कभी कभी बाज़ारू औरतों के पास जाता था, आखिर मर्द था, तो घंटी तो बजती थी। मगर मेरे साथ उसने कभी कोई हरकत नहीं की, अब तो मुझे ऐसा लगने लगा था कि वो मेरे पति का नहीं मेरा ही दोस्त है। मैं अक्सर उसे फोन करके अपने घर बुला लेती और वो भी अपनी दुकान छोड़ कर आ जाता, हम कितनी देर बातें करते, कुछ कुछ बना कर खाते पीते रहते।

शादी के बाद लोग एक से दो होते हैं, पर हम एक से तीन हो गए थे। आज्ञादी उसको इतनी थी कि वो जब चाहे हमारे बेडरूम में आ जाता था। मैं कभी नाईटी में होती या नाइट ड्रेस में तो मुझे कभी कोई शर्म या दिक्कत नहीं होती थी क्योंकि रवि कभी मेरे बदन को घूरता नहीं था।

हाँ इतना खयाल मैं भी रखती थी कि मेरे बदन का नंगापन उसे न दिखे।

अब मेरे पति तो सुबह जाते और रात को आते, रवि जब उसका दिल करता या मेरा दिल करता तो मेरे पास होता। न जाने क्यों मुझे लगने लगा के रवि मेरे दिल में मेरे पति से ज्यादा जगह बनाता जा रहा है। मुझे उसके साथ रहना अपने पति के साथ रहने से ज्यादा अच्छा लगने लगा, मैं भी उस से खुलने लगी थी।

हमारे घर में नॉन वेज नहीं बनता था, मगर बीयर या वाइन पी लेते थे, मैं भी पी लेती थी। हाँ व्हिस्की मैं नहीं पीती। मगर बीयर में भी तो हल्का नशा होता है। हमने बहुत बार बीयर पी और आपस में बहुत से बातें की, बकवास की, बकचोदी कितनी की, उसका तो कोई अंत ही नहीं।

बातचीत बढ़ते बढ़ते सेक्स की तरफ भी बढ़ी।

मैंने उसे साफ पूछा- तुम शादी कर लो, तुम्हारी लाइफ सेट हो जाएगी, कहाँ यहाँ वहाँ गंदगी में मुँह मारते फिरते हो।

वो बोला- नहीं प्रीति, सुमन का जाना मुझे इतना खाली कर गया कि उसे भरने में अभी बहुत वक्त लगेगा, हाँ तुमने कहा, शादी कर लो, तो तुम्हारी बात मैं नहीं टालूँगा, शादी कर लूँगा, पर अभी नहीं। अभी तो मैं सिर्फ 26 साल का हूँ, 2-4 साल और ऐश कर लूँ, फिर शादी कर लूँगा।

मैंने बीयर का घूंट भर कर कहा- साले, तुझे रंडी के पास जाना ऐश लगती है ?

वो बोला- अरे यार, ऐश का मतलब अपनी मर्जी से सोना, अपनी मर्जी से उठना, किसी की कोई बंदिश नहीं, सब काम अपने हिसाब से। बाकी जो जिस्म की जरूरत है तो वो तो कहीं भी पूरी कर लो।

मैंने कहा- तू न एक नंबर का कुत्ता है, साला हर जगह सूँघता फिरता है।

वो बोला- अच्छा जी मैं कुत्ता ? कोई बात नहीं आने दो तेरे पति को, उस से कहूँगा, आज इसको कुतिया बना !

न जाने क्यों मेरे मुँह से निकल गया- क्यों तू नहीं बना सकता क्या ?

बस मेरी बात सुन कर वो तो सन्न और मैं भी सन्न !

ये क्या कह दिया मैंने ! मैंने तो उसे सीधा सीधा सेक्स का न्योता दे डाला।

मैं पशोपश में थी कि अगर इस वक़्त ये उठ कर जोश में आकर मुझे पकड़ ले तो क्या होगा। अगर हम में सेक्स संबंध बन गए तो क्या ये मेरा इतना अच्छा दोस्त रह पाएगा। क्या मैं अपने पति से बेवफ़ाई कर पाऊँगी।

मैंने तो खुद को बाथरूम में बंद कर लिया और वो चला गया।

उसके बाद 2 दिन वो हमारे घर नहीं आया। फिर मेरे पति ने उसे फोन करके बुलाया। वो आया, मगर हम दोनों आपस में सहज नहीं थे। सिर्फ हल्की फुल्की सी बातचीत हुई। उसका तो पता नहीं मगर मैं खुद बहुत शर्मिंदा थी।

अगले दिन मैंने सोचा कि यार जो भी बकवास मैंने कर दी, मुझे उसके लिए अपने दोस्त से माफी मांगनी चाहिए।

मैंने फोन करके रवि को बुलाया, वो थोड़ी देर में आ गया। थोड़ी सी औपचारिक बात चीत के बाद चाय पीते पीते मैंने कहा- रवि यार, उस दिन के लिए सॉरी, मैं नशे में न जाने क्या कह गई, हालांकि मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं थी, गलती से मुँह से निकल गया। सॉरी यार।

मैंने कहा तो वो बोला- उस दिन से मैं भी यही सोच रहा था, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो, मेरी बहुत अच्छी दोस्त हो,, तुम पर मैं बहुत भरोसा करता हूँ, तुमसे प्यार करता हूँ। पर यार सच कहूँ, उस दिन तुमने जो भी कहा, मगर तुमने मेरे सोचने का नज़रिया ही बदल दिया है। पिछले दो दिनों में मेरे ख्यालों में तुम हमेशा बिना कपड़ों के ही आई हो। मैं बहुत कोशिश कर रहा हूँ, तुम्हारी इस इमेज को बदलने की पर नहीं। मुझे अब तुम कपड़ों में नज़र ही नहीं आती।

मैं सोचने लगी 'हे भगवान ये मैंने क्या कर दिया। एक अच्छे भले दोस्त को खो दिया।'

मैंने रवि से पूछा- रवि, तो क्या हम अब अच्छे दोस्त नहीं रहे ?

वो बोला- अच्छे दोस्त तो हम आज भी हैं, मैं आज भी तुमसे वैसे ही प्यार करता हूँ, पर ये मेरे ज़िंदगी में पहली बार हुआ है कि पिछले दो दिनों में मुझे सुमन की एक बार भी याद

नहीं आई। मुझे उसके जाने का एक बार भी अफसोस नहीं हुआ। मुझे सिर्फ तुम ही तुम दिखी, और किसी तरफ मेरे ध्यान ही नहीं गया। अब तू बता मैं क्या करूँ। तुमने एक सेकंड में ही सुमन को मेरे दिल दिमाग से बाहर निकाल फेंका और खुद उसकी जगह बैठ गई।

मैंने हैरान होकर कहा- यह क्या कह रहे हो रवि, मैं तुमको अपना बहुत अच्छा दोस्त मानती हूँ।

पर रवि बोला- बेशक तुम मेरी दोस्त हो और हमेशा रहोगी, मगर आज मैं तुमसे कहना चाहता हूँ, आई लव यू प्रीति, तुम मुझसे प्यार करो या न करो। मैं तुमसे सारी ज़िंदगी प्यार करूँगा, शादी करूँगा, पर प्यार सिर्फ तुमसे, सिर्फ तुमसे और किसी से नहीं।

कह कर रवि चला गया और मैं बैठ कर सोचने लगी 'यार ये क्या नया पंगा पड़ गया मेरी जान को।'

वक़्त बीतता गया, रवि का हमारे घर में आना जाना वैसे ही रहा, वही दोस्ती, वही हंसी मज़ाक। मगर अब वो पहले वाला दोस्त रवि नहीं था, अब तो वो सिर्फ मेरा दीवाना रवि था। मैंने उसको बहुत बार समझाया, मगर वो सिर्फ हर बार मुझे आई लव यू कह कर चुप करवा देता।

फिर मैंने भी सोचा कि चलो इसके दिमाग से प्यार का भूत उतारती हूँ। मैंने सोचा अगर मैं इसके प्यार को कुबूल कर लूँ, फिर देखती हूँ, ये आगे क्या करता है।

मैंने एक दिन उस से बात करते करते उसको कहा- रवि, तुम मुझसे प्यार करते हो ?

वो बोला- बेहद, बहुत, बेशुमार।

मैंने कहा- तो मैं भी तुमसे प्यार करने लगी हूँ।

वो बोला- अरे वाह, क्या बात करी।

मुझे लगा था कि वो खुशी से मुझे चूम लेगा, मगर उसने ऐसा कुछ नहीं किया। अब प्यार

का इजहार तो कर दिया, मगर उसके बाद मेरे मन में और भी बहुत से विचार आने लगे, मैं सोचने लगी किन अब जब ये मेरा बॉयफ्रेंड बन गया है, तो इसको भी अपनी जवानी का मज़ा दूँ, मगर रवि को जैसे सिर्फ मेरे मन से ही प्यार था, मेरे तन से नहीं।

मैं धीरे धीरे उसके सामने खुलना शुरू किया, बड़ी बेफिक्री से मैं उसके सामने झुक जाती, वो सिर्फ एक बार मेरे ब्लाउज़ में या टी शर्ट में झूलते मेरे बड़े बड़े मम्मों को देखता और अपना मुँह घुमा लेता.

और कोई मर्द होता तो दूसरी बार में ही मेरे मम्मे मसल देता, मगर ये तो सिर्फ बातें ही करता, खूब बातें करता, मगर कभी उसने मुझे छुआ नहीं।

मैं इतनी बेतकल्लुफ़ होती गई कि टी शर्ट लोअर से टी शर्ट पैन्टी पे आ गई और एक दिन तो मैंने जान बूझ कर नहाते हुये उससे तौलिया मांगा, और जब वो तौलिया देने आया, तो मैंने पूरा दरवाजा खोल कर उसे अपना पूरा नंगा बदन दिखा दिया।

मगर उसने सिर्फ एक बार मेरे नंगे बदन को देखा, तौलिया पकड़ाया और वापिस चला गया।

मेरी गांड जल गई। मुझे शुरू से अपने हुस्न और जवानी पर बहुत गुरुर रहा है, और ये तो मेरे जैसे एक खूबसूरत और जवान औरत को नंगी छोड़ कर चला गया।

नहा कर कपड़े पहन कर मैं बाहर आई तो सीधा रवि के पास गई, मैंने उस से पूछा- रवि एक बात बताओ, तुम्हें कोई कमजोरी या बीमारी तो नहीं है ?

वो बोला- बिल्कुल भी नहीं, एक दम फिट हूँ।

तो मैंने पूछा- तो फिर तुम एक खूबसूरत और नंगी औरत को कैसे नजरअंदाज कर सकते हो ?

वो बोला- देख प्रीति, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हारे तन से नहीं, मन से प्यार करता हूँ। तुमने मेरा प्यार कबूल किया, मेरे लिए यही बहुत है, मुझे और तुमसे कुछ नहीं चाहिए।

मैंने कहा- मगर मुझे तो चाहिए।

वो बोला- बोलो क्या चाहिए ?

मैंने कहा- ये भी बताने की ज़रूरत है, कोई बच्चा भी बता सकता है, मैं तुमसे क्या चाहती हूँ।

वो बोला- देख यार, तू अगर चाहती है कि मैं तुम्हारे साथ सेक्स करूँ, तो ये मैं नहीं कर सकता, मेरे उसूलों के खिलाफ है।

मैंने खीज कर कहा- साले तू चूतिया है, और कुछ नहीं, और गांड में ले ले अपने उसूल। और मैं उठ कर जाने लगी।

तो उसने मेरी बाजू पकड़ कर मुझे फिर से बैठा लिया- देख तू मेरी दोस्त है, मुझे जो मज़ी कह, मगर यार मेरा दिल नहीं मानता, तू बात कर और मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ, तेरी हर इच्छा पूरी करूंगा।

मैंने पहले कुछ सोचा और फिर बोली- मेरी एक इच्छा है, बहुत समय से, अगर तू पूरी कर सके ?

वो खुश हो कर बोला- तू बोल तो सही ?

मैंने कहा- ये हम दोनों के बीच ही रहे !

वो बोला- कहने की ज़रूरत है कि मुझ पर विश्वास करो।

मैंने कहा- मुझे न ...

वो उत्तेजित हो कर बोला- अरे बोल साली ?

मैंने कहा- मुझे न किसी तगड़े बाँडी बिल्डर से सेक्स करना है, जिसकी ज़बरदस्त मसकुलर बाँडी हो, लंबा हो, चौड़ा हो, तगड़ा हो, और जिसका मस्त बड़ा सारा लंड हो और जो सच कहूँ तो मेरी माँ चोद के रख दे।

वो पहले मेरे चेहरे को देखता रहा, फिर बोला- बस ?

मैंने कहा- बस मतलब ? कर सकता है ये क्या ?



वो बोला- मुझे तो बहुत से बॉडी बिल्डर जानते हैं, पता कर लेता हूँ, किसका लंड सबसे बड़ा है।

मैंने खुश हो कर उसके गाल को चूम लिया। उसने मेरे माथे को चूमा और चला गया।

अगले हफ्ते उसका फोन आया- अरे प्रीति सुन, अभी मिल सकती है क्या ?

मैंने कहा- कहाँ ?

वो बोला- बस घर से बाहर आ जा !

मैंने झट से कपड़े बदले और बाहर निकली। घर से थोड़ी ही दूर उसकी कार खड़ी थी मैं जाकर उसकी कार में बैठ गई।

वो बोला- बड़ा सज बन कर आई है, शादी करने जा रही है क्या ?

मैंने कहा- नहीं लड़का देखने जा रही हूँ, अगर पसंद आ गया, तो सीधा सुहागरात मनाऊँगी।

वो हंस पड़ा और हम बातें करते करते एक माल के बाहर पहुंचे, गाड़ी को पार्किंग में लगा कर वो चला गया।

10 मिनट बाद वो आया, उसके साथ एक खूब हट्टा कट्टा मर्द भी था। मगर यह तो एक हब्शी था। कद करीब 6 फीट, बेहद काला और बदशक्ल, सांड जैसा लंबा चौड़ा बदन। वो आकर कार में पीछे बैठ गया, मैं तो आगे बैठी थी।

रवि भी बैठ गया और बोला- बोल, लड़का पसंद आया ?

मैंने कहा- अरे ये तो मेरे मन की बात बूझ ली तुमने, मैंने बहुत सी फिल्मों में बड़े बड़े औजारों वाले हब्शी देखे थे, तब सोचती थी कि अगर मुझे कोई हब्शी मिल जाए तो क्या हो, पर आज तो तूने मेरे दिल का अरमान पूरा कर दिया, ऊपर से तो अच्छा ही हैं, असली

चीज़ तो अंदर छुपी होती है।

रवि बोला- तो जा कर पीछे बैठ और चेक कर ले।

“सच में?” मैंने पूछा।

और मैं गाड़ी से उतरी और पीछे की सीट पर बैठ गई, उसने मुझे हैलो कहा, मैंने भी उसे हैलो कहा।

मैंने उससे इंग्लिश में कहा- मेरे दोस्त ने मुझे कहा है कि आपकी पैन्ट में कुछ ऐसा छुपा है, जो मुझे डरा सकता है?

वो बोला- बिल्कुल, मेरी बहुत सी दोस्त मेरे औज़ार की मार से रो पड़ती हैं, और मुझसे हाथ जोड़ कर छोड़ने की विनती करती हैं। पर मैं कभी किसी को छोड़ता नहीं। जो मेरे पास आ गई, उसकी माँ चोद कर रख देता हूँ।

मैंने कहा- ओ के तो मुझे भी डराओ।

उसने थोड़ा सा एडजस्ट हो कर अपनी पैन्ट के हुक, बटन और जिप खोली और अपनी जीन्स घुटनों तक उतारी। उसकी चड्डी में ही जैसे कोई खीरा या मूली रखी हो, ऐसा लगा मुझे।

जब उसने अपनी चड्डी उतारी तो मैं सच में डर गई। करीब 8 इंच का मोटा लंड, जो एक तरफ सर फेंके सो रहा था। इतना बड़ा तो मेरे पति का पूरा खड़ा होने पर भी नहीं होता है। मैंने पूछा- पूरा खड़ा होने पर ये कितना बड़ा हो जाता है?

वो बोला- इसे अपने हाथ में पकड़ो, इससे खेलो और खुद देख लो।

मैंने उसका लंड अपने हाथ में पकड़ा और उसको आगे पीछे करने लगी, उसका काला टोपा बाहर निकाल कर देखा। इसमें कोई शक नहीं कि उसका लंड बड़ा दमदार था। मेरे सारे

बदन में बहुत हलचल हो रही थी।

थोड़ा सा खेलने के बाद मैंने उसका लंड छोड़ दिया क्योंकि वो बिल्कुल भी खड़ा नहीं हुआ था।

मैंने रवि से कहा- मुझे अच्छा लगा, पर अभी घर वापिस चलो, हम फिर किसी दिन इससे मिलेंगे।

मैं गाड़ी से नीचे उतरी तो रवि भी नीचे उतरा और बोला- क्या हुआ, पसंद नहीं आया।

मैंने कहा- यार पसंद तो आया, पर साले का खड़ा ही नहीं हुआ।

कहानी जारी रहेगी.

[pritixyz24@gmail.com](mailto:pritixyz24@gmail.com)

कहानी का अगला भाग : [मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-2](#)

## Other stories you may be interested in

### मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-2

कहानी का पिछला भाग : मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-1 मगर सच यह था कि मैं उसके लंड को सिर्फ छू कर ही इतनी गर्म हो चुकी थी कि मेरा अभी सेक्स करने को दिल कर रहा था, मगर अभी [...]

[Full Story >>>](#)

### नंगी कहानी : वासना के पंख-4

दोस्तो, आपने इस शौहर बीवी की इस नंगी कहानी के पिछले भाग में पढ़ा कि कैसे प्रमोद और मोहन ने अपनी बीवियों को अदल-बदल करके चोदने की योजना बनाई थी। इस योजना के तहत प्रमोद अपनी देसी बीवी को हनीमून [...]

[Full Story >>>](#)

### झुमरी तलैया में हनीमून-1

दोस्तो, आप सबका तहे दिल से धन्यवाद कि आपने मेरी आपबीती तथा अड़ोस-पड़ोस में घटित घटनाओं क्सक्सक्स फिल्म दिखा कर साली को चोदा देवर भाभी की कामुकता और चुदाई खो खो कोच को पटाकर चुत चुदाई को कहानी रूप में [...]

[Full Story >>>](#)

### साली की चुदाई करके उसकी इज्जत बचाई

हमारे साथ जो कुछ गलत होता है, अनर्थ होता है। उसके पीछे हमारी गलत सोच ही अपनी अहम भूमिका निभाती है। हम अपनी गलती का कभी स्वीकार नहीं कर पाते और दूसरों पर दोष थोपकर किनारा कर जाते हैं। शादी [...]

[Full Story >>>](#)

### वासना के पंख-3

दोस्तो, आपने पिछले भाग में पढ़ा कि कैसे मोहन ने अपनी सुहागरात पर यह जाना कि उसे कुंवारी लेकिन बहुत ही वासना से भरी चुदक्कड़ और शायद थोड़ी अनुभवी पत्नी मिली है। वो उसे अपने दोस्त के साथ मिल कर [...]

[Full Story >>>](#)

